International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1818-1820

भारतीय विदेश नीति : स्वतंत्रता से राजीव गाँधी तक

डॉ0 रमा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ इसके पहले भारत विदेशी शासन (गुलामी) व्यवस्था से जकड़ा हुआ था। माउन्टबेटन भी नहीं चाहते थे कि भारत में एकता बनी रहे। ब्रिटिश नीतियों ने साम्प्रदायिक विभेद का काम किया ताकि उसे रण से छोड़ा जा सके। भारत–पाक एकता उनको अपने हित के खिलाफ लगा था क्योंकि इतना बड़ा क्षेत्र विश्व में अग्रणी बन सकता था। इसीलिए देशी रिसायतों को भी स्वतंत्रता दी गयी जो कि राज्यों से अलग रहने के लिए स्वतंत्र थे। अंग्रेज चाहते थे कि भू–सामरिक व्यवस्था खत्म हो जाय। इसके तीन कारण थेः–

1. वह ये सिद्ध करना चाहते थे कि सिर्फ अंग्रेज ही इतने बड़े भू–भाग पर शासन कर सकते है।
2. भू–भाग जितना बँटा होगा उतना ही वे कब्जा कर सकेगे। पाकिस्तानी लोगों की में भावना रहेगी कि अंग्रेजों ने ही उनको स्वतंत्रता दिलायी है।
3. बिना किसी सैन्य गुट का सदस्य बने भारत की स्वतंत्रता सम्प्रभुता की रक्षा करना। अर्थात् निर्गुट बने रहना और विश्व के अन्य राज्यों को भी अमेरिका, सोवियत रूस के गुट से अलग निष्पक्ष रखना।
4. भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व व्यवस्था के सापेक्ष सम्मानपूर्ण ढंग से विकसित करना।

कांग्रेस ने पूरी रियासतों को राष्ट्रीयता की भावना से जोड़ दिया था। सरदारपटेल का कहना था कि रिसायतों को यह कतई अधिकार नहीं कि वे भारत से अलग रह सके। पूरा भारत एक शासन व्यवस्था के तहत था। जनता की भावना को ही भारतीय बनाया गया सैनिक ताकत भी इस्तेमाल किया गया ताकि एकता व अखण्डता बनायी रखी जा सके। चुनौतियों का सामना करना काफी कड़ा पड़ता था। ये निम्नलिखित थी–

1. राज्य की एकता एवं अखण्डता को बनाये रखना विदेश नीति की पहली समस्या थी।
2. आजादी का लाभ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था में भी बनाये रखना था। भारत ने उपनिवेशी शासन व्यवस्था का विरोध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया। न्याय, शान्ति एवं विकास का मुद्दा भारतीय विदेश नीति का प्रथम लक्ष्य बन गया था।
3. भारत ने क्षेत्रीय एकता एवं अखण्डता के तहत सारे राष्ट्रो को स्वतंत्रता दिलवाने में मदद की है। मार्च, 1947 में एशियाई सम्बन्ध कांफ्रेस भारत ने करवाई थी। इसमें विश्व के सारे राष्ट्रों के वे नेता बुलाये गये जो स्वतंत्रता तथा शासन व्यवस्था के संघर्ष में लगे थे। यह नेहरू के नेतृत्व में बुलायी गयी थी। नस्लवाद, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद की सारी बुराइयों से लड़ने के लिए भारतीय विदेश नीति अपनायी गयी।
   विजय लक्ष्मी पंडित ने स्वतंत्र भारत की प्रतिनिधि के रूप में संयुक्त राष्ट्र में नस्लवाद के खिलाफ आवाज उठायी एवं इसे अन्तर्राष्ट्रीय बुराई बताया था। 1947 में चीन में माओत्से तुगं एवं सनयात सेन की दलों में लड़ाई हुई जिसमें साम्यवादी तुंग की दल ने सनयात सेन की उदारवादी दल को हराया था। भारत ने सर्वप्रथम चीन को एक स्वतंत्र राष्ट्र में मान्यता प्रदान की। एक विदेश नीति के रूप में एशियाई सौह्यदर्य को भारत ने बनाये रखने का प्रयास किया ताकि पश्चिमी राजनीति का इस पर प्रभाव न पड़ सके।
4. भारत अपनी विदेश नीति में पूरी स्तंत्रता चाहता था जिसमें वह गुट निरेपक्षता की नीति अपनाता है। यह महत्वपूर्ण निर्धारक है। बीच में भारत को लगा कि वह अपनी मूल नीति का पालन नहीं कर पा रहा है। चीन एवं पाकिस्तान आक्रमण इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है; शीत युद्ध में पाक ने खुद को उसका हिस्सा बना लिया जबकि भारत गुटनिरपेक्षता चाहता था। सेंटो एवं सीटो की सदस्यता जब पाकिस्तान ने ली तो भारत ने असुरक्षा की भावना महसूस की। चीन के प्रति भारतीय नीति अदूरदर्शी माना जाता है। साम्यवाद से भारत को डर नही था परन्तु समस्या यह थी कि नवोदित चीन के व्यवहार के बारे में पता नहीं था। परन्तु सन् 1954 में चाऊ एन लाई एवं नेहरू के बीच में पंचशील समझौता हुआ। हिन्दी–चीनी भाई–भाई का नारा सन् 1955 तक दिया जाता था। परन्तु चीन विदेश नीति यह कह रहा था कि भारत शन्तिपूर्ण सहयोग की नीति अपना रहा है। जबकि चीन चाहता था कि उसका नेतृत्व माना जाय। चीन ने Middle Kigdom Complex के सिद्धान्त के तहत भू–भाग के अनुसार चीन अपने पड़ोसी को अपने अधीन रखे।

चीन भारत के क्षेत्रीय नेतृत्व से भी डरा था। किसी भी विवाद को भारत सुलझाने के लिए महत्वपूर्ण था। जबकि चीन खुद को एशिया महाद्वीप नेता मानता था। भारत ने एशियाई सहयोग के लिए ही यू0एन0 की स्थायी सदस्यता को ठुकरा दिया था। इतने प्रयत्नों के बावूजद चीनी वैदेशिक नीति भारत के खिलाफ रही थी। 1955 के बांडुग सम्मेलन में भारत ने चीनी रिश्तों को भरने के लिए भारतीय प्लेन में अमरीका ने बम लगाया था जिसमें बैठकर बाडुंग सम्मेलन में चाऊ एन आई गये। इस प्लेन का नाम Princess Kashmir था। रिश्ते को कटु बनाने का यह मुख्य कारण था। इसके बाद चीन ने भारत को भविष्य के शत्रु राष्ट्रों में रूप में देखने लगा। चीन चाहता था कि भारत उत्तर कोरिया का समर्थन करे। जबकि भारत ने मध्यस्थ की भूमिका निभाने का प्रयास किया था। 1962 के चीन युद्ध में भारतीय आदर्शवाद को झटका लगा और भारत ने यथार्थ की राजनीति का सहारा लेने का प्रयास किया।

मोटे तौर पर भारतीय विदेश नीति सन् 1927 से सन् 1964 तक नेहरू के हाथ में थी। नेहरू को विदेश नीति विरासत में मिली थी।

नेहरू का निर्णय आज भी भारतीय विदेशी नीति में पाया जाता है। शास्त्री को विदेश नीति से ज्यादा सरोकार नहीं था। ये नेहरू जैसे कुलीन नहीं थे। शास्त्री का बाल्यकाल कठिनाई से गुजरा था। शास्त्री एक अच्छे संगठनकर्ता थे ये सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience) में प्रथम बार जेल गये। नेहरू के कार्यकाल में ये रेलवे, गृहमंत्री बने थे। रेल मंत्री से त्याग पत्र इन्होंने नैतिकता के आधार पर दिया था। गृहमंत्री के रूप में उन्होंने प्रथम बार नेपाल यात्रा की। डॉ0 भगवान दास (प्रिसिंपल स्कूल के) से शास्त्री ने समन्वयवाद का रास्ता निकालना सीखा था। इसमें कभी–कभी हीनभावना भी दिखती थी। शास्त्री इनसे काशी विद्यापीठ में मिले थे। शास्त्री की प्रतिद्वंदिता मोरारजी देसाई से थी। शास्त्री की प्रतिद्वन्दिता मोरारजी देसााई से थी परन्तु देसाई ने पद से इंकार कर दिया। शास्त्री ने सर्वप्रथम स्वतंत्र विदेश मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह को बनाया था। स्वर्ण सिंह ने सर्वप्रथम पड़ोसी देशों से सम्बंध सुधारने का प्रयास किया। शास्त्री के सामने अप्रैल, 1965 में कच्छ के क्षेत्र में पाक ने आक्रमण कर दिया। शास्त्री ने पाक को पीछे हटने की चेतावनी दी। युद्ध विराम हुआ पाक शान्ति समझौता शास्त्री जी मृत्यु का कारण बना शास्त्री जी जातने थे कि भारत को मजबूती मिले इसके लिए परमाणु शक्ति हासिल करने की नीति को अपनाया होगा। शास्त्री ने अमरीका एवं रूस से परमाणु छाता माँगा। वे केवल शान्तिपूर्ण कार्य के लिए बताया था। सन् 1965 के युद्ध के बाद सोवियत संघ के मध्यस्थता से ताशकन्द समझौता हुआ। इस समय तक अमेरिका और सोवियत रूस विकास कार्यों की ओर केन्द्रित थे यह दितान्त का समय था क्योंकि अमरीका वियतनाम के साथ विवादों में व्यस्त था। अमरीका ने अप्रत्यक्ष रूप से ताशकन्द समझौते में भूमिका निभायी थी। समझौते में शास्त्री ने दो शर्त रखी थीः–

1. समझौते में कश्मीर का जिक्र नहीं होगा और
2. दोनों देश आगे लड़ाई नहीं करेंगे।

ताशकन्द में ही शास्त्री जी की मृत्यु हो गयी। शास्त्री ने पिल्लै समिति की गठन किया एवं विदेश सचिव पद की स्थापना की। सारे सचिवों की संयुक्त बैठक का भी प्रावधान किया ताकि विदेश नीति ठीक बन सके। उन्होंने संगठनात्मक कार्य किया। इन्होंने परमाणु नीति को नयी दिशा दी थी। सिर्फ डेढ़ वर्षों में इस दिशा में काफी प्रगति हुई।

सन् 1964 तक आदर्शवाद का प्रभाव ज्यादा रहा था। सन् 1964 के बाद शास्त्री जी ने आदर्शवाद को भारतीय विदेश नीति की पराजय का मुख्य कारण माना है। त्याग की भावना भी पराजय का कारण मानी गयी। शास्त्री जी ने यथार्थवादी राजनीति को ज्यादा महत्व दिया था। राजनीतिक यथार्थवाद को लाकर शास्त्री जी शान्ति स्थापित करना चाहते थे। चीन एवं पाक की चुनौतियों के कारण ही आदर्शवादिता की अवधारणा को त्याग किया था। एकतरफा शान्ति, विश्वास का वादा भारत ही निभाता रहा बाकी देश नहीं। जाने–अनजाने ऐसी घटनायें घटी एवं देशों ने जो नीतियों को अपनाया वह भारतीय नीति के बिल्कुल खिलाफ थी। भारतीय नेतृत्व को चुनौती चीन दे रहा था। चीन खुद को एशिया महाद्वीप का नेता मान रहा था। यद्यपि भारत भी चीन को हमेशा समर्थन देता रहा परन्तु चीन की विदेश नीति सदैव भारत के खिलाफ रही है। कौटिल्य अपने मण्डल सिद्धान्त में यही बात करते है कि दो शक्तिशाली राष्ट्र आपस में लड़ेगे ताकि प्रतिनिधि वे ही बने। सरदार पटेल ने माना कि जनता की भावना के आधार पर ही देशी रियासतों के बारें में निर्णय लेना चाहिए। जबकि अन्य भारतीय राजनीतिज्ञ शासक के निर्णय को ही प्रमुख मानते थे क्योंकि जूनागढ़, जम्मू और कश्मीर, हैदराबाद एवं भोपाल के शासक पाक के पक्ष में ही फैसला दें क्योंकि वहाँ के शासक मुस्लिम थे। यदि वे पाक में विलय ना भी करें तो भी भारत से स्वतंत्र रखकर अपना सम्बन्ध बनायेगे। परन्तु ज्यादातर राष्ट्र भारत में ही शामिल हुए। जबकि जूनागढ़ का भारत में विलय करने के लिए शक्ति का प्रयोग करना पड़ा। पाक ने जनान्दोलन का बहाना बताकर जम्मू और कश्मीर पर आक्रमण कर दिया एवं राजा हरी सिंह पर पाक में विलय या स्वतंत्र घोषित करने का प्रस्ताव जम्मू एवं कश्मीर को दिया। पाक ने जनजातियों को उकसाकर कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। हरी सिंह ने इस परिस्थिति में भारत में विलय की सन्धि का प्रस्ताव रखा और जम्मू एवं कश्मीर भारत का हिस्सा बन गया। भारतीय सेना ने कबाइलियों को खदेड़कर कश्मीर को सुरक्षित किया। परन्तु नहेरू की सुढ़ीकरण की नीति के कारण आधा कश्मीर जिस पर कबाइलियों ने कब्जा कर रखा था पाकिस्तान का हिस्सा बन गया। नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का दायित्व मानते हुए शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में यह मामला दे दिया। वे अध्याय 7 के तहत यू0एन0 में पहुँचे। यू0एन0 ने दोनों राष्ट्रों को युद्धरत् घोषित कर दिया। जबकि यह मामला अध्याय 6 में ही आता है। 13 अगस्त, 1948 में यह प्रस्ताव पास हुआ कि दोनों राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन न करे और शान्ति के लिए सीमा पर सैनिक देखभाल कर सके।

चूंकि भारत गुलामी से अभी–अभी निजात पाया था इसीलिए वह पश्चिमी प्रस्ताव को मानने के लिए विवश था। दूसरी बात, यह थी कि पाक को आक्रमणकारी माना भी परन्तु कश्मीर विवाद को हल करने के लिए जनमत संग्रह की बात कहीं गयी थी एवं दोनों देशों को अपनी सेना हटाने को कहा गया था। नहेरू कुछ शर्तों के साथ जनमत संग्रह के लिए तैयार थे परन्तु पाकिस्तान किसी भी शर्त को मानने के लिए तैयार नहीं था अतः जनमत संग्रह नहीं हो सका। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में जम्मू एवं कश्मीर का शासन शुरू हुआ। शासन में कोई दिक्कत नहीं थी। नेशनल कांफ्रेस के प्रमुख शेख अब्दुल्ला कभी नहीं चाहते थे कि जम्मू एवं कश्मीर पाक में मिलें। सन् 1962 के भारत–चीन युद्ध में सोवियत संघ ने भारत का साथ नहीं दिया था। भारत जम्मू एवं कश्मीर मुद्दे पर सिर्फ Bi-lateral Treat, की बात करता है। पाकिस्तान एवं चीन की घटनाओं के आधार पर 1964 तक के भारतीय विदेश नीति के अनुभवों के आधार पर किसी राष्ट्रहित को बनाये रख पाना सिर्फ आदर्शवाद पर संभव नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी नेहरू का विश्वास उतना नहीं रह गया क्योंकि शान्ति सिर्फ एक लक्ष्य ही रह गया तथा चीनी एवं पाक आक्रमण में भारत ने खुद को असहाय महसूस किया। भारत ने यह सीखा कि एकता एवं अखण्डता के लिए आदर्शात्मक मूलों के साथ–साथ मार्गेन्थाऊ की राजनीतिक यथार्थवाद नहीं मिलाया जायेगा, तब तक राष्ट्र वास्तविक रूप से अखण्डता की रक्षा नहीं कर पायेगा।

राजा हरी सिंह द्वारा भारत में विलय के बाद तथा पश्चिमी राष्ट्रों की प्रतिक्रिया के उपरान्त भारत ने आदर्शात्मक मूल्यों को छोड़ना प्रारम्भ कर दिया था। देश की अखण्डता खण्डित हो चुकी थी। राष्ट्र के ढेर सारे भाग पर पाक का कब्जा हो गया था। जम्मू एवं कश्मीर का मामला सिर्फ संयुक्त राष्ट्र में जाने से रूका रह गया है। सन् 1964 के बाद जो भी विदेश नीति बनी उसमें सैद्धान्तिकता कम वरन् व्यावहारिकता पर ज्यादा जोर दिया गया था। लाल बहादुर शास्त्री के अनुभव के बारे में शक था। निर्णय की कमी मानी जाती थी। परन्तु शास्त्री जी तत्काालिक सूझबूझ से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के साथ घरेलू नीति को भी शास्त्री ने पूरा किया। चीन बहुलता के आधार पर कश्मीर को पाना चाहता था।

यह एक बड़ी चुनौती थी। 'अकसाई चीन' का भाग पाक ने चीन को सौप दिया एवं पश्चिमी मोड़ पर पाक खुद काबिज था एवं पूर्वी पाक भी उपलब्ध था।

शास्त्री ने पश्चिमी पाक पर आक्रमण कर लौहार के नजदीक तक पहुँच गयी। भारतीय सेना ने काफी तेज आक्रमण किया। पाक ने भी सारी सेना पश्चिमी फ्रन्ट पर लगा दी परन्तु सफलता न मिल सकी। शास्त्री जी ने अदम्य साहस, निर्णय लेने की त्वरित क्षमता ने अमरीका तक को आश्चर्य चकित कर दिया था। पाक ने पश्चिमी देशों से मध्यस्थता का प्रस्ताव रखा। यू0एस0एस0आर0 के नेतृत्व में ताशकन्द समझौता हुआ। जिसमें माना गया कि–

1. पाक छद्म आक्रमण न करेगा।
2. द्विपक्षीय मामला सुलझाया जायेगा।
3. यथास्थिति कायम रखी जायेगी।
4. भारत कब्जे की जमीन छोड़ देगा।

यू0एस0एस0आर0 पर भारतीय निर्भरता के कारण, भारत मजबूर भी था। श्रीमती गाँधी ने ऐसे निर्णय लिये जो नेहरू नहीं ले सकते थे। श्रीमती गाँधी घरेलू मामलों में विषम काम कर रही थी। रेलवे का हड़ताल हुआ। 1974 में पोखरन परमाणु परीक्षण किया था। रेलवे हड़ताल एक बड़ा हड़ताल था। 1977 में जनता सरकार आती है, जिसमें कांग्रेस शासन का अन्त हुआ। यह एक मिश्रित दल थी। कांग्रेस के बाद परिवर्तन की आशा की गयी। मोरार जी देसाई ने गुट निरपेक्षता में भूमिका के लिए सोवियत संघ से संधि तोड़ने की बात कही। देसाई ने राजघाट पर शपथ ली। 2 वर्ष 2 माह देसाई एवं 6 माह के (जुलाई 1979–1980) तक चरण सिंह रहे।

देसाई एक कठोर गाँधीवादी थे। जिमी कार्टर भारत आये। कार्टर की माँगे भारत में नर्स थी। कार्टर सिर्फ एन.एफ.टी. पर हस्ताक्षर करवाना चाहते थे। देसाई ने भविष्य में परमाणु परीक्षण छोड़ने की बात कही। राष्ट्रों से सम्बन्ध बनाना उनका प्रमुख कार्य था। विदेश नीति कभी भावनाओं पर नहीं बनती है। देसाई सरकार का रूझान सोवियत संघ से ज्यादा था। 'लाभप्रद द्विपक्षीयता' के तहत नेपाल, अमरीका, एवं श्रीलंका से सम्बन्ध सुधार पड़ोसी देशों से तुष्टीकरण के समझौते पर आधारित था। पड़ोसियों को ज्यादा लाभ दिया गया। चौ0 चरण सिंह ने 15, अगस्त को कहा कि यदि पाक एक बम बनाता है तो हम 10 बम बनाएगे। यदि एक अच्छा कथन नहीं था। मोरार जी ने परमाणु विकल्प त्याग दिया था। यह सरकार की अपरिपक्वता को दिखाती है। कूटनीति के यह खिलाफ था। गुटनिरपेक्षता का मतलब सबसे मैत्री, सबसे प्यार है–देसाई के लिए।

1980 में पुनः श्रीमती गाँधी सत्ता में आती हैं। 1984 तक उनका शासन चला। नाम को श्रीमती गाँधी ने अमली जामा पहनाया। श्रीमती गाँधी ने कहा विश्व व्यवस्था में दोहरा मापदंड लागू नहीं होगा इसलिए सोवियत संघ अफगानिस्तान में विस्तारवादी की नीति के कारण सोवियत संघ का भारत विरोध करता है। 1980 में एशियन खेल, 1983 में NAM का नयी दिल्ली सम्मेलन हुआ। श्रीमतीगाँधी ने कहा कि जो NAM अपनी पटरी से उतरा था वह पुनः पटरी पर आ गया। इजराइल से जैगुवार, स्वीडन से बोफोर्स, विभिन्न हथियार लिया था। भारत अपनी सुरक्षा पुरा कर चुका था। टेलीविजन विस्तार कार्यक्रम विश्व में सबसे ज्यादा श्रीमती गाँधी के कार्यकाल में हुआ ताकि विश्व को समझा जा सके। 31 नवम्बर, 1984 को श्रीमती गाँधी की हत्या हो गयी।

"She was the leader of immantsposte"
"She was able to control one emotions".
'She to adopted realist approach based on circumstances."

राजीव गाँधी प्रधानमंत्री (1984 से 1989 तक) बने उनके पदस्थापना की आलोचको ने बड़ी आलोचना की है। लेकिन राजीव गांधी के कार्य काफी विकासवादी रहे हैं। राजीव कहते हैं कि ''जनता की अपेक्षा से डर लगा रहा है।'' 1986 हरारे, 1989 (बेलग्रेड) की सदस्य राजीव रहे थे। यदि विश्व 1 प्रतिशत भी दान करे तो 18 विलियन डालर जुटा सकेगा। पर्यावरण के लिए 25 वर्ष बाद राजीव गांधी चीन गये। संयुक्त कांग्रेस को सम्बोधित राजीव करते हैं। राजीव ने उदारीकरण की नींव रखी। भुट्टों ने भी राजीव गाँधी को गलत समझा था विदेश नीति में। तकनीकी क्रान्ति के लिए C-DOT की स्थापना राजीव ने की थी। रेलवे, हवाई जहाज टिकट की शुरूआत की गयी। मिखाइल गोर्वाचोव इसी समय सोवियत संघ की राजनीति में पर्दापण किया। राजीव ने 46 विदेश यात्रायें की। गोर्वाचोच एवं राजीव की व्यक्तिगत मित्रता अच्छी थी। अमरीका, पाक एवं चीन से सम्बन्ध राजीव ने सुधारी थी। खाड़ी युद्ध में भी भूमिका निभायी थी।

1989 से 1990 से वी0पी0 सिंह प्रधानमंत्री बने थे। विदेशनीति में महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया। IPKF को श्रीलंका से वापस बुलाया सिंह ने एवं कहा कि भारत भविष्य में कभी भी शन्ति सेना नहीं भेजगा। पाक ने घुसपैठ बढ़ा दिया था। CIA के प्रमुख रॉबर्ट गेट्स को पाक आक्रमण धमकी के कारण भारत आना पड़ा। प्रथम बार प्लेन हाईजैक के कारण खूँखार अपराधी छोड़े गये। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भारती विदेश लगातार बदलाव से गुजर रही है।

सन्दर्भ

1. डॉ0 अश्विनी कुमार सिंह : कश्मीर समस्या, 2012
2. सुषमा गर्ग : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, 2014–15
3. डॉ0 दीनाथ शर्मा : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
4. रामसूरत पाण्डेय : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
5. डॉ0 बी0एल0 फाड़िया : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2017
6. पुष्पेश पंत : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
7. यू0आर0घई : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
8. तेजस्कर पाण्डेय, सविता पाण्डेय : भारत में सामाजिक समस्याएँ, 2012